दो नौकरानियाँ काम छोड़कर जा चुकी है। एक जरुरतमंद वृद्धा शान्तिबाई उनके घर काम करने आ जाती है। बच्चे उससे घुल–मिल जाते है। एक दिन शान्तिबाई गाँव जाने की बात कहकर चली जाती है। शराबी बेटे के पीटने से घर छोड़कर चली जाती है। दो–चार दिन बाद उसकी लाश मिल जाती है। वृद्धा शान्तिबाई की बदतर जिंदगी की दास्तान यहाँ दिखती है। न केवल उच्च वर्ग के लोग अपितु परिवार भी उनका शोषण करता हैद्य वृद्धा शांताबाई को उसका अपना बेटा ही मार देता हैद्य मृत्यू पर महानगरीय बच्चों की सोच कि शबुड्डी को तो मरना ही होता हैश पता चलती है। न गरीब घर में सुरक्षित है न बाहरद्य झुग्गियों की सफाई का ऐलान सुनते ही मिसेज शर्मा का खुश हो जाना संवेदनशून्यता का उदाहरण है। 'अचानक, बिजली की कौंध की तरह मुझे खयाल आया, इन बेघर हुए परिवारों में कई औरतों को ऐसे काम की तलाश होगी, जहाँ काम के अलावा सिर पर छत भी मिले। हाँ, सचमुच अब एक नौकरानी का स्थायी बन्दोबस्त होने में कोई दिक्कत नहीं होगी, मैंने सोचा और बालकनी से बाहर बढ़ते शोर को शीशे लगे दरवाजे से धकेलकर, मैं महेन्द्र की बगल में आ लेटी। नींद से पलकें बोझिल हो रही थीं। सोते हुए महेन्द्र बिल्कुल बच्चे–से मासूम लग रहे थे। उनके गले में बाँह डाले, डनलप का अतिरिक्त तकिया अपने सिर के नीचे लेकर मुझे बिस्तर बेहद आरामदेह लग रहा था...औरं अगले बीस सेकेण्ड में ही मैं बहुत गहरी नींद सो रही थी।'[७]

२१वीं सदी की महिला कहानीकार सुधा जी अपनी कहानियों के माध्यम से मजदुरों की स्थिति और त्रासदियों के लिए उत्तरदायी ताकतों के उद्देश को बेनकाब करना चाहती है। साथ ही सामाजिक यथार्थ को गहराई के साथ पहचानकर व्यक्तिवादिता और भौतिकता की आग से खत्म होती मनुष्य की संवेदनशून्यता को दिखाने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष –

समाज के प्रगति, समृद्धि एवं खुशहाल जीवन देनेवाले श्रमिकों के योगदान को नमन करना चाहिए। उत्पादन वृद्धि तथा अर्थव्यवस्था को मजबूती देने में श्रमिकों के प्रयास रहते है। अंत: केवल १ मई के दिन मजदूर दिवस मनाने के बदले मजदूरों के कठिन परिश्रम, दृढ निश्चय और निष्ठा का सन्मान करना होगा। साथ ही मजदूरो के हितों की रक्षा के लिए संम्पूर्ण राष्ट्र और समाज को सदैव तत्पर रहना होगा। सुधा जी अपनी कहानियों के माध्यम से शोषित मजदूरों को सन्मान एंव सुरक्षा देने का प्रयास कर रही है। आज भी मजदूरों की हालात यही है।

जैसे,

''ओ मजदूर, ओ मजदूर,
तू ही सब चीजो का कर्ता
तू ही सब चीजों से दूर,
ओ मजदूर, ओ मजदूर।''

संदर्भ –

१. वार्ष्णेस रघुवीर दयाल – हिंदी साहित्य के बदलते प्रतिमान, पांडूलिपी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स. १९७५ पृ.१९६

२. अरोडा सुधा – १० प्रतिनिधी कहानियां, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं.२०१३, पृ. १६४

३. सक्सेना प्रतिमा –आधुनिक हिंदी गजल और आधुनिकता बोध,पृ.१५८

४. अरोडा सुधा – १० प्रतिनिधी कहानियां, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं. २०१३, पृ. ४४

५. अरोडा सुधा – १० प्रतिनिधी कहानियां, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं. २०१३, पृ. ४६

६. अरोडा सुधा – १० प्रतिनिधी कहानियां, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं.२०१३, भूमिका से पृ.१७

७. अरोडा सुधा – अन्नपूर्णा मंडल की आखरी चिट्ठी, साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहाबाद दिल्ली, प्र. सं.२०१४, पृ.४८

⌘⌘⌘

अपनापन ही भूल गया। वैसे भी अपने माँ–बाप को बुढ़ापे में दर–दर की ठोकरें खाने के लिए मजबूर करनेवाली नयी पीढ़ी का मजदूरे के साथ सौहार्दता दिखाना संभव नही है। आज की दयनीय स्थिती के संबंध में डॉ.प्रतिमा सक्सेना जी लिखती है, 'मोहभंग से लेकर आज की बिगडती हुई स्थितियों तक पूंजीवादी तबका खूब पनप रहा है। बडे घरानों के अतिरिक्त नव धनाढयों का एक बहुत बडा वर्ग रक्तबीज की भांती बढ रहा है। समाज में सामन्त वर्ग पुरी तरह समाप्त नहीं हो पाया है। वह पंचो, सरपंचो, भूमिपतियों, छोट–बडे नेताओं और दलालों के रूप में आज भी विद्यमान है। इसलिए शोषण कम नहीं हुआ है, बल्कि बढा ही हैद्य'[१]

१९७६ में धर्मयुग में छपी 'सात सौ का कोट' यह कहानी एक व्यक्ती के एकालाप के माध्यम से बुनी हुई सामाजिक चेतना की जबरदस्त कहानी है। कहानी में दर्जी मास्टर अपनी दुकान पर आए हर ग्राहक के साथ बात करता दिखाई देता है। ऐसा लगता है कि जैसे दुकान मालिक औरतों के कपडे सीने की लाभदायक व्यापारिक मजबूरी को, अपनी इच्छा से झेलता हुआ, मर्दाना कपडों का विशेषज्ञ, अपने बदलते परिवेश पर चुटीला व्यंग्य कर रहा है। बात–बात पर वह पाठक को हतप्रभ कर, आत्मसाक्षात्कार के बिंदु पर खडा कर देता है। परदुख कातर सज्जनता का ढोंग करते हुए, स्वार्थी आदमी, अपने सामर्थ्य का किस हद को तक दुरुपयोग कर सकता है इसे यह कहानी स्पष्ट करती है। कहानी के रामदीन की दास्ता सुनते–सुनते पाठकों के रोंगटे खड़े हो जाते है। गुजराती साहब का मेड इन डेन्मार्क का इंपोर्टेड कोट रामदीन की छोटी–सी गलती से जल जाता है। इस गलती की सजा देता दुकान मालिक वही कोट रामदीन को जबरदस्ती देता है। रामदीन की तनखा से हर महिने पचास रुपए काटने की बात करता हैद्य बेचारा रामदीन अपनी बीवी, बूढे माता–पिता की समस्या बताता हैद्य फिर दयावान बनता मालिकउसकी पत्नी को भी घर में काम करने बुलाता हैद्य सिर्फ छत और खाना देकर दो बन्धुआ मजदूर दिन–रात काम करते रहते हैद्य रामदीन को धमकाते मालिक कि सोच दिखाता यह कथन 'गरीब को अकेले में डाट–डपट दो,उस पर कोई असर नहीं होगा मगर उसके जातभाईयों के सामने उसे जलील कर दो तो वो पानी–पानी हो जाएगा ,मुंह ऊचा नही करेगा'[१] तथा 'बड़ा सुख है जी, महीने में एकाध दिन वो बीमार पड़ती है तो रामदीन कपड़े, बर्तन, झाड़–पोंछ सब कर देता है। बस, इनके खाने में कोई रोक–टोक नहीं हमारी। पेट भर के खाते हैं। अपने बाप की बात हमेशा याद रखता हूं कि इन लोगों की तनखा दस रुपये कम करनी हो तो दो रुपए का खाना खिला दो। भूखे पेट को भर दो, फिर तो ये आपके ताजिंदगी गुलाम हो जाएंगे। हलवाई था न मेरा बाप, कभी तबीयत होती तो खुद सारे कारीगरों को लाइन से खड़ा करके बचे हुए समोसे रसगुल्ले बांट देता। ना बांटे तो अगले दिन खराब हो जाएं। तो घूरे पे फेंकने से तो बेहतर है किसी के पेट में जाएं। बस जी नौकर–चाकर उसमें ही खुश!'[१] शोषक की मानसिकता दिखाता है।

१९९६ में वर्तमान साहित्य विशेषांक में प्रकाशित 'जानकीनामा' कहानी कस्बे से मुंबई महानगर में घरेलू कामकाज के लिए आई एक छोटी–सी मासूम लड़की की कहानी हैद्य जुलेखा तथा जानकी कस्बे में पीछे छूटे अपने परिवार को भुलकर मन–प्राण से अपने नए परिवार को अपना लेती है। एक दिन आतंकी हमले में बेचारी गायब हो जाती हैद्य मुहल्ले के किसी की बेटी अगर खो जाती तो लोग दिन–रात एक कर उसे खोज निकालते परंतु बेचारी जानकी नौकर है तो उसे खोजने अपनी जान जोखीम में डाले कौन जाताद्य गरीब कि ओर देखने का नजरिया स्पष्ट करते सुधा जी कहती है, 'आतंकी हमलों में ऐसे ही लोग मरते हैं, जिनके सपने बहुत बड़े नहीं हैं, जो दो जून की ईमानदारी की रोटी खाकर एक सामान्य खुशनुमा जिंदगी गुजर–बसर करना चाहते हैं पर अनचाहे अनजाने आतंकी हमले का शिकार हो जाते हैं'[१] जुलेखा उर्फ जानकी भी ऐसे ही मर जाती है।

'तेरहवें माले से जिन्दगी' कहानी में वंचितों का परिवार में होनेवाला शोषण दिखाई देता हैद्य महानगरों में पूरे दिन घर संभालने के लिए अच्छी नौकरानी मिलना दुविधाजनक होता है। तेरहवें माले पर रहनेवाला शर्मा परिवार इसी दुविधा में है। उनके घर से अब तक

Editors Message...

In globalised era Higher Education Plays very crucial role in Development of Nation, as it empowers the individuals with necessary competence for achieving important personal, social and higher level of professional goals. Its importance depicted by words of first Prime Minister Jawaharlal Nehru "A university stands for humanism, for tolerance, for reason, for the adventure of the ideas and for the search of truth. It stands for onward march of human race towards even higher objectives. If the universities discharge their duties adequately, then it well with the nation and the people". India's higher education system is the world's third largest in terms of students, next to China and the United States. Policies and approach adopted by Indian government after implementation of economic reforms are not favorable to the higher education. Since the reforms period there has been a continuously decline in the budgetary allocations made by the government to fund higher education in India. Present paper aims to find out new trends in higher education in India. Paper also discusses various challenges in the field higher education in India.

India has the largest higher educational system with respect to the number of institutions. After the independence of the country, the state and central governments have given great attention to the development of higher education. As a result, the system of higher education in India has seen an impressive growth in terms of a number of universities and colleges. The share of the unaided private sector has increased significantly since 2001 in terms of the number of institutions and enrollment. Indian higher education System comprises three stages – under graduate level, post graduate level and doctorate level. The Ministry of Human Resource Development (MHRD) is highest body of Governance which is responsible for supervising the higher education system through UGC. Higher education in India has expanded rapidly over the past two decades. This growth has been mainly driven by private sector initiatives. India's Higher Education sector has witnessed a tremendous increase in the number of Universities/ University level Institutions & Colleges since independence Indian higher education presently includes 892 universities out of which 48 central universalities, 394 state universities, 125 deemed universities and 325 private universities. Apart from the above universities, other institutions are granted the permission to autonomously award degrees. However, they do not affiliate colleges and are not officially called 'universities' but 'autonomous organizations' or "autonomous institutes". They fall under the administrative control of the Department of Higher Education. These organizations include Indian institute of Technology, Indian Institutes of Management, National Institute of Technology and All India Institute of Medical Sciences.

Dr. Bapug Gholap

INDEX

01) वर्तमान हिन्दी उपन्यासों में चित्रित सामाजिक मूल्य
प्रो. (डॉ.) शिवाजी उत्तम चवरे, देऊर (सातारा) ||11

2) तलाकशुदा औरत का दर्द — हलाला
प्रो. (डॉ.) विजय महादेव गाडे, भिलवडी, जि. सांगली ||14

3) हिंदी कहानी साहित्य में चित्रित वंचित और शोषित मजदूर जीवन
डॉ. संजीवनी संदीप पाटील, गडहिंग्लज ||19

4) मुन्शी प्रेमचंद जी के कहानियों में शोषितों का चित्रण
डॉ. लीला रामचंद्र भिंगारदेवे, विटा, ता. खानापूर, जि. सांगली ||24

5) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के 'अब गरीबी हटाओ' नाटक में वंचित एवं....
डॉ. बोबडे रमेश शिवाजी, म्हसवड ता. माण, जि. सातारा ||26

6) हिंदी उपन्यासों में चित्रित शोषितों का जीवन
प्रो. (डॉ.) अनुप दळवी, श्रीरामपुर जि. अहिल्यानगर ||28

07) हिंदी आदिवासी कहानी साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन की समस्याएँ
निलेश सखाराम डामसे, इस्लामपुर ||32

08) 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में आदिवासी विमर्श
प्रा. नितेश गांगवे, दहिवडी, जि. सातारा ||37

09) हिंदी सिनेमा में चित्रित वंचित एवं शोषितों का जीवन
प्रा. प्रदीप बबन हिवरकर, सातारा ||40

10) हिंदी सिनेमा में चित्रित वंचित एवं शोषितों का जीवन
प्रा. डॉ. प्रशांत नलवडे, प्रा. अमोल मोरे, पंढरपुर ||43

11) मांझी (द माउंटेन मैन) फिल्म में अभिव्यक्त दलित चेतना
प्रो. (डॉ.) हाशमबेग मिर्जा, सिनगरवार पांडूरंग गिरजप्पा, धाराशिव ||46

12) हिंदी कविता में चित्रित शोषितों का चित्रण....
डॉ. जाविद शेख, उरुण इस्लामपुर ||51

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

लेखिकाओं का विशिष्ट स्थान है। सुधा अरोडा जी इन लेखिकाओं में विशेष उल्लेखनीय है। सुधा जी ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज की ज्वलंत समस्याओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। सुधा जी की कहानियाँ समाज की हर विसंगति से जूझती दिखाई देती है। साथ ही मानव जीवन एवं समाज चर्चोंका वास्तविक चित्र प्रस्तुत करती है। अपनी विशिष्ट लेखन शैली के कारण साहित्य जगत में उनकी अलग पहचान है। सुधा जी ने अपने कथा साहित्य में महानगरीय जीवन की अनेक समस्याएँ, संबंधों की विसंगतियाँ, तनाव, रिश्तों की जटिलता को यथार्थ रूप से चित्रित किया है। एक संवेदनशील स्त्री के रूप में सुधा जी की पहचान है। उनके व्यक्तित्व में वैचारिक दृष्टि है। वह जिस घटना से आहत होती है, उसी घटना को अपने कलम से कागज पर उतार देती है। समय के साथ उन्होंने अपने लेखन शैली में बदलाव किया है। अपने दायरे से बाहर आकर, व्यापक नजरिया अपनाकर सुधा जी ने कई कहानियाँ लिखी हैं। सुधा जी के लेखन के बारे में वार्ष्णेय जी का कथन द्रष्टव्य है, श्सुधा जी की पीड़ा नारी जीवन की अस्तित्वगत गहराई,विसंगति और अनुभूति की गहराई इनकी सभी कहानियों में उभरकर आई है। सुधा के पास अनुभूति भी है और अनुभूती को अभिव्यक्त करने की क्षमता भी हैद्य'१ सुधा जी कहानियाँ जीवन की अतल गहराई तक जाकर विसंगति एवं अनुभूति को स्पष्ट करती है।

आज वैश्विक स्तर पर तकनीकी जगत से लेकर सभी दिशाओं में व्यापक परिवर्तन हो रहे हैं। निरंतर हो रहे वैज्ञानिक अविष्कारों से मनुष्य जीवन को गति प्राप्त हो रही है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर से ऊपर उठने का प्रयास कर रहा है। इन प्रयासों ने कई अस्मितावादी विमर्शों को हमारे सम्मुख लाकर खड़ा कर दिया है। समाज को प्रगति, समृद्धि एवं खुशहाल जीवन देनेवाले श्रमिकों के योगदान को आज का मनुष्य भूलता जा रहा है। म्म दक जीत्वू संस्कृति पनप गई है। जो मजदूर काम करते बेरोक–टोक कहीं पर भी आ–जा सकता है। उसे काम खत्म होते ही निषिद्ध समझकर बाहर बिठाया जाता है। आज समाज में शोषक और शोषित ऐसे दो वर्ग बने हैं। मजदूरों पर अन्याय–अत्याचार हो रहे हैं। काम के बदले कम पैसे देना, असुरक्षितता, उपेक्षा, अन्याय, शोषण, बंधुआ मजदूरी आदि कई समस्याओं से मजदूर त्रस्त है। वैश्वीकरण की आँधी ने गरीब तथा मजदूरों को पूरी तरह से विस्थापित कर दिया है। आज हिंदी साहित्य की सभी विधाओं में मजदूरों की जिंदगी, समस्या, शोषण का चित्रण हो रहा है। पहले भी मजदूरों का, श्रमिकों का शोषण होता था पर आज का साहित्य प्रखरता से एवं स्पष्टता से मजदूरों के जिंदगी के अंधेरे कोने को पाठकों के सम्मुख ला रहा है। कोरोना की महामारी ने तो मजदूरों का जीवन अंधकारमय बन गया है। कई मजदूर भूख से तड़प रहे हैं।

२०१२ में प्रकाशित 'कांच के इधर दृ उधर' यह कहानी सुधा जी के संवेदनशील मन से पाठकों को रूबरू कराती हैद्य आज २१वीं सदी में भी मजदूरों का शोषण हो रहा है। काम के बदले कम पैसे देना, काम पर असुरक्षितता, उच्च वर्ग की उपेक्षा, अन्याय, शोषण, बंधुआ मजदुरी आदि कई समस्या से मजदूर त्रस्त है। उन्ही मजदुरों की दुर्दशा यह कहानी दिखाती है। वैश्विकरण की आँधी ने गरीब तथा मजदुरों को पूरी तरह से विस्थापित कर दिया है। इस कहानी में मधुमक्खी के छत्ते एवं मधुमक्खीयां गरीब एवं मजदूरों का प्रतिक है। ऊँची इमारतों पर रंग लगानेवाले गूंगे मजदूर की मौत हो जाती है। न ही ठेकेदार उसके मौत की जिम्मेदारी लेता है न उस बेबस परिवार की मदद करता है। ठेकेदार यहाँ उच्च वर्ग की मानसिकता से परिचित कराता है।

रेशमा और भीमा का पिता मजदूर है। वह बडी ईमानदारी एवं लगन के साथ काम करता है। वह दिहाड़ी मजदूर है। रोज तीन सौ रूपये उसे मजदूरी मिलती है। उस इलाके की सभी इमारतें, टावर पर वह रंग देने का काम करता है। वैसे तो दस साल से वह इसी पुताई के काम में है पर अब तक उसका काम पक्का नहीं हो पाया है। जो काम दुसरे मजदूर आठ घंटे में करते है, वह पांच घंटे में करता है। जोखिम का काम होने पर भी वह खूश है। एक दिन बंधे हुएं बांस उतराते समय ऊपर वाले मजदूर के हाथ से बांस उसके

दिखाना लेखक भगवानदास मोरवाल का प्रमुख उद्देश्य है जिसमें वे सफल हुए हैं और अंतिम बात इसकी प्रासंगिकता। इस उपन्यास की प्रासंगिकता भविष्य में भी बरकरार रहेगी यह हमारे मन में विश्वास है और वही इस उपन्यास की सबसे बडी सफलता है।

संदर्भ संकेत

१ मोरवाल भगवानदास — 'हलाला',वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली प्रथम संस्करण २०१६ पृ. ०३
२ वहीं कवर पेज
३ वहीं कवर पेज
४ कुरान: सुरा २ (अल बकराह) आयत २३०
५ मोरवाल भगवानदास—'हलाला',वाणी प्रकाशन,नयी दिल्ली प्रथम संस्करण २०१६ पृ.०६
६ वहीं पृ.०८
७ वहीं पृ.१७—१८
८ वहींपृ.२८
९ वहींपृ. ३१
१० वहींपृ.३१—३२
११ कुरआन, अन—निसा ४.३४ पृ. ३३
१२ मोरवाल भगवानदास —'हलाला', वाणी प्रकाशन,नयी दिल्ली प्रथम संस्करण २०१६ पृ. ४२
१३ वहीं पृ.५७
१४ वहीं पृ.७२
१५ वहीं पृ.६३
१६ वहीं पृ. ६३
१७ वहीं पृ.७२
१८ वहीं पृ.७८
१९वहीं पृ. ११७
२० वहीं पृ. १२०
२१ वहीं पृ. १०९
२२ वहीं पृ. १३०
२३ वहींपृ. १३०
२४ वहींपृ. १३१
२५ वहींपृ. १३१
२६ वहींपृ. १४५
२७ वहींपृ. १४५
२८ वहींपृ. १५६
२९ वहींपृ. १७०
३० वहींपृ. १७२—१७३
३१ वहींपृ. १७२—१७३
३२ वहींपृ. १७४

03

हिंदी कहानी साहित्य में चित्रित वंचित और शोषित मजदूर जीवन

(सुधा अरोडा जी की कहानियों के विशेष संदर्भ में)

डॉ. संजीवनी सन्दीप पाटील
हिंदी विभाग प्रमुख
कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय, गडहिंग्लज

प्रस्तावना —

किसी भी विमर्श का आरंभ वंचित एवं शोषित होने के अहसास के साथ लेता है। जो आर्थिक, सामाजिक तथा शैक्षिक रूप में पिछड़े हुए है। जो अपने जीवन यापन के लिए आवश्यक मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्तता भी नहीं कर पाते हैंद्य जिन्हें समाज के शोषित वर्ग के लोग अपना वर्चस्व स्थापित कर अलग कर देते है, ऐसे लोगों को वंचित या शोषित कहा जाता है। वंचित एवं शोषितों के प्रति, उनके शोषण के प्रति समाज में जागरूकता निर्माण करने हेतु साहित्यकार प्रयासरत् रहते है। समाज के नवनिर्माण में साहित्य को भूमिका महत्वपूर्ण होती है। साहित्य की पारदर्शिता समाज के नवनिर्माण में सहायक होती है जो खामियों को उजागर कर उनका समाधान प्रस्तुत करती है। हितेन सह इति सष्टिमूह तस्याभाव: साहित्यम्। संस्कृत के इस प्रसिद्ध सूत्र—वाक्य के अनुसार साहित्य का मूल तत्व सबका हित साधन है। २१ वीं सदी की सशक्त कहानीकार के रूप में सुधा अरोडा जी को पहचाना जाता है। उनकी कहानियां वंचित एवं शोषितों का जीवन, समस्या, समाधान, आत्मसंघर्ष प्रस्तुत करती है।

मूलशब्द — मजदूर, अन्याय, अत्याचार, श्रमिक, शोषण, संवेदनशून्यता, विसंगति, आदि।

सुधा जी के साहित्य में वंचित एवं शोषितों का जीवन—

समकालीन कहानी साहित्य में महिला

MAH/MUL/ 03051/2012 **ISSN :2319 9318**

विद्यावार्ता

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

April To June 2025
Issue 54, Vol-03

Date of Publication
01 April 2025

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com